दानिश की आँखें सच देखती थीं

भारतीय फोटो जर्नलिस्ट दानिश सिद्दीकी की तालिबान द्वारा अफगानिस्तान में हत्या कर दी गई है दानिश सिद्दीकी की गिनती दुनिया के बेहतरीन फोटो जर्नलिस्ट में होती थी. दानिश हिंसा के बीच मानवीयता का चेहरा दिखाते थे.कश्मीर से लेकर कोरोना काल तक मे हुई मानवीय त्रासदियों को उन्होंने अपने कैमरे की नजर से दुनिया को दिखाया था

दानिश की तस्वीरें कड़वा सच दिखाती थी उनकी तस्वीरें कश्मीर में हो रहे जुल्मों सितम ,देश मे हो रहे मॉब लीचिंग के हर सच को चेहरा देती थी वो हर उस कट्टरपंथी का विरोध करते थे. जो इस धरती को हिंसा से भरना चाहता था. इसलिए कट्टरपंथीयो को दानिश जैसे लोगो से कोफ्त होती थी मैं हमेशा कहता हूं कि भारत के विचार को दोनो तरफ के कट्टरपंथीयो से खतरा है वो हर उस आवाज को मार देना चाहते है जो इस देश के विचार को मजबूत बनाती है।

दानिश तुम से वादा है की तुम्हे आज जरूर इन आतताइयों ने मार दिया है लेकिन तुम्हारी तस्वीरों के बदौलत भारत का विचार हमेशा जिंदा रहेगा।

-अपूर्व भारद्वाज

कोविड 19

- पवन

शहर ख़मोश है, गलियों में सन्नाटों का आलम है
जो नग़मे गुनगुनाते थे, वो अब गाने नहीं देता

हुस्न बेताब है लेकिन शहर में चाहतें कम हैं
बन्द बाज़ार उल्फ़त का, दीवाने नहीं देता

राहे-शौक पर वीरानियों का ख़ौफ़ बरपा है
उसे आने नहीं देता, मुझे जाने नहीं देता

खिलाफ़े-हुक्मे-नाज़मि सैरे-गुलशन कर नहीं सकते
जो मन्ज़ूरे-हाकिम हो,वो अफ़साने नहीं देता

वक्त की मांग है आगाह रहें दहशत-फरोशों से
उसी को अपना कहते हैं जो घबराने नहीं देता

मंज़र दोस्तों का ओझल है कब से निगाहों से
तसव्वुर के सिवा उनको कहीं आने नहीं देता

हर आरज़ू महदूद है ख्वाबों की सरहद तक
और सरहद के उस पार वो जाने नहीं देता

मयख़ाने मुकफ़्फ़ल हैं, दरवाजों पे ताले हैं
मेरी प्यास को अब कोई पैमाने नहीं देता

जो शम्मा घर में रौशन थी,वो रोती है मज़ारों पर
जहां आहो-फ़ुगां ना हो, वो आशिआने नहीं देता।

आश्वासन दे सके इस दौर में खुशहाल रहने का
वो मस्जिद नहीं देता, वो बुत्तख़ाने नहीं देता

हसरतें घायल हैं और आरज़ूओं पर जंजीरे हैं
किसी सूरत दिले-ग़मगीं को बहलाने नहीं देता

मिज़ाजे-वक्त का 'पवन' नया एक नाम है 'कोविड'
ख़ता जो एक की तूने, वो दोहराने नहीं देता।

तसव्वुर= कल्पना। महदूद=सीमित। मुकफ़्फ़ल=ताला बंद। आहो-फ़ुगां=रोना-धोना।

आकाश से गिरने वाली बिजली से बचें

ताराशंकर

भारत में हर साल करीब 2.5 से 3 हजार लोग आकाशीय बिजली की चपेट में आकर मरते हैं! जिसमें से अधिकांश मध्य प्रदेश, झारखण्ड, यूपी, उड़ीसा, बिहार, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल में होते हैं! आइये जानते हैं इससे कैसे बचें:

1. गरज-चमक के साथ होने वाली बारिश के समय यथासंभव खुले मैदान में न रहें क्योंकि ऊपर से आती बिजली जमीन की सबसे ऊँची चीज पर आकर्षित होकर गिरती है! जैसे बड़े वृक्ष, बिजली के खंभे, पहाड़ी, ऊँची बिल्डिंग! बिजली अपने गिरने की जगह से 100 फुट की दूरी तक घातक हो सकती है!

2. जब बिजली कड़क रही हो तो किसी वृक्ष के नीचे बारिश से बचने के लिए शरण न लें, बिजली के खंभे के नीचे न खड़े हों! अभी परसों ही जयपुर में 4 लोग बारिश से बचने के लिए एक पेड़ के नीचे खड़े थे, चारों लोग मारे गये बिजली से और 9 लोग ऊँचे वाच टावर पर मारे गये! क्योंकि बिजली को Earthing आकर्षित करती है! गाँव में कहावत है कि बिजली दुधारू वृक्षों पर ज्यादा गिरती है जैसे बरगद, पीपल! असल में ये बात इस तरह सही है क्योंकि बरगद और पीपल दोनों विशाल और ऊँचे वृक्ष होते हैं!

3. अगर आप खेत में काम कर रहे हों तथा आस-पास घर न हो तो जहाँ हैं वहीं उकड़ू बैठ जाएँ पैर सटाकर! खड़े बिल्कुल भी न रहें और न ही लेटें और न ही किसी पेड़ के नीचे छिपें! अगर अपने आस-पास आप ही सबसे ऊँचे हैं तो बिजली आप पर

ही गिरेगी इसलिए अपनी ऊँचाई कम करिए!

4. अपनी कार से जा रहे हैं और बिजली कड़कने लगे तो कार के अंदर ही दरवाजे बंद करके बैठे रहें! क्योंकि बिजली कार पर गिरेगी तो उसकी ऊपरी सतह से होते हुए सीधे जमीन में चली जाएगी, कार के अंदर नहीं जाएगी! धारा प्रवाह का नियम है कि वो किसी मेटल की खोखली वस्तु की ऊपरी सतह पर ही प्रवाहित होती है, उसके भीतर नहीं! कोशिश करें कार रोक कर शीशे बंद करके अंदर ही बैठे रहें! ध्यान रहे कि खुली गाड़ी आपको बिजली से बचा नहीं सकती! गाड़ी हो तो बंद हो वर्ना खुली गाड़ी से उतर कर ?मीन पर पैर सटाकर उकड़ू बैठ जाएँ!

5. साइकिल या मोटरसाइकिल से जा रहे हों तो उतर कर उकड़ू बैठ जाएँ साइकिल/मोटरसाइकिल से दूर! बिजली मेटल से ज्यादा आकर्षित होती है! इस भ्रम में न रहे कि रबर या प्लास्टिक के जूते चप्पल आपको आकाशीय बिजली से बचा लेंगे!

6. छाता है तो उसे न खोलें! छाता भी बिजली को आकर्षित कर सकता है!

7. जब तक बिजली कडकना बंद न हो जाए तब तक घर के अन्दर रहें!

8. घर के सारे बिजली के स्विच बंद कर दीजिये! टीवी, बल्ब, और कुछ एप्लायंसेज खराब हो सकते हैं! इस दौरान शावर न लें, सारे बिजली के एप्लायंसेज बंद रखें! मेटल के नल से दूर रहें!

9. इस दौरान स्विमिंग न करें चाहे वो आउटडोर हो या इंडोर! अगर पूल, नदी, झील में हों तो तुरंत बाहर निकल कर घर में आ जायें या आने का मौका न हो तो निकलकर उकड़ूं बैठ जायें!

10. जंगल में हों तो छोटी झाड़ियों के पास आ जायें अथवा बड़े वृक्ष ही सब हों तो उससे थोड़ी दूर जाकर बैठ जायें!

11. बारिश में नहाने का अपना आनंद है लेकिन जब बिजली कड़क रही हो तो ये आनंद न लें! बाहर नहाने न निकलें!

12. याद रखें अगर आप खुले में हैं तो अपने आस-पास सबसे ऊँची चीज बनने से बचें! ऊपर से गिरती बिजली को जो सबसे पहले मिलेगा, उसी पर गिरेगी! और इस दौरान मेटल (या पानी) की किसी भी चीज के डायरेक्ट संपर्क से बचें! बिजली के कुचालक और सुचालक आपको मालूम ही होंगे!

व्यंग्य

शेर को गोद लें

असगर वजाहत

सत्ता परिवर्तन के बाद हंगरी के समाज में बड़े रोचक परिवर्तन आ रहे हैं। सरकार के पास साधनों की कमी है और दूसरी ओर निजीकरण का बोलबाला है। सरकारी संपत्तियाँ कौड़ियों के मोल बेची जा रही हैं। कहा जा रहा है कि कम्युनिस्ट सरकार ने जिनका राष्ट्रीयकरण किया था वे संपत्तियाँ उनके मालिकों को वापस कर दी जायेंगी। खेती के क्षेत्र में जो सरकारी संस्थाएं बनायी गयी थीं और जो बहुत सफल थीं उन्हें तोड़ दिया जायेगा। जमीन निजी संपत्ति बन जायेगी।

निजीकरण का प्रभाव शहर के चिड़िया घर पर भी पड़ा है। सरकार के पास चिड़िया घर चलाने के लिए पैसे की कमी है और चिड़िया घर से कहा गया है कि वह अपने साधनों से पैसा कमाए। टिकट लगाने के अलावा चिड़िया घर के पास और क्या रास्ता हो सकता है? लेकिन केवल टिकट लगाकर कितना पैसा कमाया जा सकता है? इसलिए चिड़िया घर ने एक योजना शुरू की है। वह योजना यह है कि चिड़िया घर के जानवरों को 'गोद' लिया जा सकता है।

उदाहरण के लिए यदि कोई एक महीने के लिए शेरों के भोजन और देख-रेख पर खर्च होने वाला पैसा देता है तो एक महीने के लिए शेर उसके हो जायेंगे। शेरों के कटहरे पर यह लिख दिया जायेगा कि यह शेर एक महीने के लिए फलां का है। इसी तरह दूसरे जानवरों, चिड़ियों, साँप, बिछुओं आदि-आदि को भी अगर कोई चाहे तो गोद ले सकता है।

मैं चिड़िया घर में यह तमाशा देख रहा था कि अचानक एक कटहरे पर नजर पड़ी जिसमें गधा बंद था। चूंकि योरोप में गधे कम होते हैं इसलिए योरोप वासियों के लिए ऐशियन गधा एक रोचक जानवर है। गधे के कटहरे पर जो जानकारियाँ दी गयी थीं उनमें ये भी लिखा था कि गधा भारत से लाया गया था। गधे के कटहरे पर यह नहीं लिखा था कि उसे किसी ने 'एडाप्ट' किया है। जबकि दूसरे जानवरों को काफी 'एडाप्ट' किया गया था। एक भारतीय होने के नाते मुझे दु:ख हुआ कि हमारे देश से आये गधे की विदेश में बड़ी उपेक्षा हो रही है।

अगले दिन मैं भरतीय राज दूतावास गया। राजदूत महोदय से सीधी-सीधी बातचीत तो नहीं की लेकिन चिड़िया घर के भारतीय गधे का पूरा प्रसंग बताया और कुछ ये संकेत दिया कि राजदूत महोदय यदि चाहें तो भारतीय गधे को 'एडाप्ट' कर सकते हैं। राजदूत महोदय मेरा आशय समझ गये और बोले- मेरे पास बहुत हैं।"

मैं निराश हो गया और लगा कि भारतीय गधे का जीवन संकट में है।

बुदापेश्त में पता नहीं कैसे पाकिस्तानी दूतावास के एक अधिकारी से भी परिचय हो गया था जो शहर में इधर-उधर घूमते हुए मिल जाते थे। उन्होंने एक बार बातचीत के दौरान बताया था कि पाकिस्तानी राजदूत तो ये कहते हैं कि हंगरी में पाकिस्तानी दूतावास बंद कर देना चाहिए। जब मैंने कारण पूछा था तो उन्होंने बताया था कि हंगरी में कोई भी भारत के खिलाफ कुछ नहीं सुनना चाहता।

गधे वाले प्रसंग के बाद पाकिस्तानी डिप्लोमैट अचानक बाजार में मिले। मुझे ध्यान आया कि गधा भारत से जरूर लाया गया था लेकिन यह जानकारी नहीं है कि कब लाया गया था। मतलब यह है कि यदि वह भारत विभाजन से पहले लाया गया था तो उसकी जिम्मेदारी जितनी भारत पर बनती है उतनी ही पाकिस्तान पर भी बनती है। यह सोचकर मैंने पाकिस्तानी डिप्लोमैट को पूरी बात बतायी और कहा कि आप लोग उस गधे को गोद क्यों नहीं ले लेते। डिप्लोमैट महोदय सोच में पड़ गये और कुछ देर बाद बोले-अगर कहीं से यह साबित हो सके कि वह गधा कश्मीर से है तब हम उसे एडॉप्ट कर सकते हैं।

मैंने उनसे कहा- आप किस हवा में हैं। अगर यह शक भी हो गया कि वह गधा कश्मीर से है तो भारत सरकार उसे 'एयर-लिफ्ट'करा लेगी।"

सभ्यता और आदिवासी

थोड़ी देर पहले नेशनल जियोग्राफी चैनल एक प्रोग्राम दिखा रहा था, जिसमें अमेरिका के कुछ लोग कुछ आदिवासियों को जंगल से लाकर वहां शहर की चकाचौंध और रंगीनियाँ दिखा कर उनको प्रभावित करने की कोशिश करते दिख रहे हैं।

इन लोगों के साथ घूमते हुए एक आदिवासी बड़ी-बड़ी बिल्डिंग्स देखता है। "वाह इतने सारे घर..." बोलते हुए वो बड़ा खुश होता है।

फिर वो देखता है कि सड़क किनारे भी लोग हैं जो भीख मांगते हैं और रेन-बसेरे में रात बिताते हैं।

वो उन कार्यक्रम बनाने वालों से पूछता है कि, "ये सब लोग बाहर क्यूँ पड़े हैं.. जबकि आपके पास इतने सारे घर हैं शहर में?"

आयोजक जवाब देता है-"जो घर आप देख रहे हैं वो इन सबके नहीं हैं। वो दूसरे लोगों के हैं।"

आदिवासी पूछता है, "मगर वो सारे घर तो खाली थे.. उनमे कोई क्यूं नहीं रहता?"

आयोजक बोलता है "वो अमीर लोगों के घर हैं। यहाँ लोगों के पास कई-कई घर होते हैं। लोग पैसा इन्वेस्ट करने के लिए घर खरीद लेते हैं।

आदिवासी कहता है, "ये किस तरह की सभ्यता है तुम्हारी?

किसी के घर खाली पड़े हैं और लोग सड़कों पर रह रहे हैं...जबकि पूरी उम्र आपको रहने के लिए सिर्फ एक घर ही चाहिए...

आप अपने अतिरिक्त घर अपनी और नस्लों को क्यूँ नहीं दे देते हैं?

ऐसे घरों का क्या करेंगे आप?"

फिर वो आगे बोलता है-"हमारे जंगल में जब कोई नवयुवक शादी करता है तो हम सारे गाँव वाले मिलके उसके लिए घर बनाते हैं...

अपने हाथ से उसका छप्पर बनाते हैं और मिलकर बांधते हैं।

ऐसे हम एक-दूसरे के लिए अपने हाथों से घर बनाते हैं और अपने बच्चों को बसाते हैं।"

इतनी बात सुनकर कार्यक्रम वाले शर्मिंदा हो जाते हैं, और उन्हें समझ आता है कि जिस सभ्यता की डींग मारने के लिए वो इन आदिवासियों को लाए हैं, वह असल में सभ्यता है ही नहीं। इन्होने हमारे सभ्य होने का भ्रम चकनाचूर कर दिया एक सीधे और भोले सवाल से...और समझा दिया कि दरअसल हम लोगों की सभ्यता, सभ्यता है ही नहीं। अपनी ही आने वाली नस्लों का शोषण है बस।

-सिद्धार्थ ताबिश